UNIT - 1
समावेशी विद्यालय का सृजन

Q. विशेष आवश्यकताओ वाले बच्चो से क्या अभिप्राय है। इन बच्चो के प्रमुख प्रकारो की विवेचना कीजिए।

Ans:- प्रस्तावना :-

किसी कक्षा मे विभिन्न तरह के बच्चे होते है जिनकी अपनी - अपनी आवश्यकताएँ हो सकती है। जैसे - कुछ बच्चे अक्षरो को उल्टा लिखते है, कुछ की श्रवण शक्ति कम होती है, कुछ मंद बुद्धि वाले होते है। सभी बच्चे सामान्य गति से नही सीख पाते है। कुछ बच्चो का उच्चारण स्पष्ट नही होता है जिसके कारण इन बच्चो का विकास एवं दैनिक कार्यशीलता प्रभावित होती है।

इन्ही विभिन्नताओ के कारण इन बच्चो के पालन - पोषण मे कुछ भिन्न या विशिष्ट तरीके अपनाने की आवश्यकता होती है। उनकी शिक्षा के लिए विशेष योजना बनानी पड़ती है। अतः कहा जा सकता है कि कक्षा मे विभिन्न प्रकार की योग्यताओ वाले बच्चो की विभिन्न आवश्यकताएँ होती है। अतः जब ये भिन्नताएँ अपनी चरम सीमा पर पहुंच जाती है तो उन्हे विशिष्ट बालक की संज्ञा दी जाती है।

परिभाषाएं :-

सैमुयल - ए - किर्क के अनुसार :-

"विशिष्ट बालक वह बालक है जो सामान्य बालको से शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक व संवेगात्मक विशेषताओ से भिन्न होता है और उसके गुणो को अधिकतम सीमा तक विकसित करने के लिए विशेष कक्षा का प्रबन्ध करना पड़ता है।"

क्रुबीक के अनुसार :-

" एक विशिष्ट बालक वह है जो शारीरिक, बौद्धिक, संवेगात्मक एवं सामाजिक रूप सामान्य बुद्धि एवं विकास की दृष्टि से विचलित होते है।"

Scanned with CamScanner

विशेष आवश्यकता वाले बालकों के प्रकार

विशिष्ट बालक सामान्य बालकों से भिन्न होते है। विभिन्न प्रकार के विशिष्ट बालक आपस में भी एक दूसरे से भिन्न होते है। ये भिन्न बौद्धिक योग्यताओं में, शारीरिक योग्यताओं में या शैक्षिक उपलब्धि में हो सकते है। मुख्य रूप से सभी प्रकार के विशिष्ट बालकों को चार वर्गों में विभाजित किया है :—

विशिष्ट बालक

1. शारीरिक रूप से विशिष्ट
   - (a) दृष्टि दोष युक्त बालक
   - (b) श्रवण दोष युक्त बालक
   - (c) वाक् दोष युक्त बालक
   - (d) अपंग बालक (अस्थि विकलांगता)
2. मानसिक रूप से विशिष्ट
   - (a) प्रतिभाशाली बालक
   - (b) सृजनात्मक बालक
   - (c) मानसिक मंद बालक
3. शैक्षिक रूप से विशिष्ट
   - (a) शैक्षिक तीव्र बालक
   - (b) शैक्षिक रूप से पिछड़े बालक
   - (c) सीखने में अयोग्य बालक
4. सामाजिक रूप से विशिष्ट
   - (a) कुसमायोजित
   - (b) बाल अपराधी
   - (c) समस्यात्मक
   - (d) विचलित
   - (e) नशे के आदी बालक
   - (f) संवेगात्मक रूप से विचलित बालक

(1) शारीरिक रूप से विशिष्ट बालक :—

विकलांगों की शिक्षा हमारी लोकतांत्रिक आवश्यकता है। यद्यपि विकलांगों के लिए विशेष शिक्षा और समन्वित शिक्षा की व्यवस्था की गई है लेकिन विकलांगों की संख्या को देखते हुए यह नगण्य है। विश्व विकलांग जनसंख्या के करीब 80 प्रतिशत विकलांग के क्षेत्र विकासशील देशों में रहते है। शारीरिक विकलांगता के क्षेत्र में नेत्रहीन, मूक और बधिर

विकृत हड्डी, लूले लगड़े आदि आते है।

(a) दृष्टि दोष युक्त बालक :-

दृष्टि विकलांगता मानव समाज की सबसे दुःखद स्थिति है यद्यपि वर्तमान समाज मे उपयोगी अनुसंधान के परिणाम-स्वरूप अनेक विशेष विद्यालयो की स्थापना हुई थी। इस विकलांगता के प्रमुख कारण संक्रामक रोग, दुर्घटना या चोट, वंशानुक्रम प्रभाव, परिवेश का प्रभाव तथा विषैले पदार्थो का प्रयोग आता है। 60 से 70 प्रतिशत बच्चे संक्रामक रोग के कारण दृष्टिहीन होते है।

(b) श्रवण दोष युक्त बालक :-

शारीरिक विकलांगता के अन्तर्गत दूसरा महत्वपूर्ण वर्ग मूक - बाधिर विकलांगो का है। इसके अन्तर्गत वे बालक आते है जो किसी कारण से पूर्ण रूप से या आंशिक रूप से सुनने मे असमर्थ होते है। ये किसी दुर्घटना के कारण या वंशानुक्रम के कारण भी हो सकते है।

(c) वाक दोष युक्त बालक :-

वाक विकलांगता का कारण श्रवण - क्षमता मे कमी या उसका विकारयुक्त होना है। कान के रोग के कारण भी यह विकृति आती है। मास्तिष्क पर चोट लग जाना, तालु, कण्ठ, जीभ, दांत आदि मे किसी प्रकार की विकृति के कारण यह विकलांगता आ जाती है। वाणी विकार अनुकरण के आधार पर भी होता है। जैसे - शब्दो का उच्चारण, उतार चढ़ाव, चेहरे के हाव- भाव इत्यादि।

(d) अस्थि विकलांगता :-

अस्थि विकलांग बालक वे होते है, जिनकी मासंपेशियो, अस्थि व जोड़ो मे दोष या विकृति होती है जिससे वह सामान्य बालको की तरह कार्य नही कर पाते और इन्हे विशेष सेवाओ, प्रशिक्षण, उपकरण, सामग्री तथा सुविधाओ की आवश्यकता होती है। इसमे पोलियोग्रस्त आदि भी आते है।

Scanned with CamScanner

(a) मानसिक रूप से विकिरट बालक :-

मानसिक रूप से पिछड़ा या मन्दबुद्धि, सृजनात्मक तथा प्रतिभाशाली बालक इस श्रेणी में आते हैं। मन्दबुद्धि बच्चों में सोचने, समझने और विचार करने की शक्ति कम होती है। सृजनात्मक बालक नए क्षेत्र की खोज करते हैं नए निष्कर्ष निकालते हैं। प्रतिभाशाली बालक मानसिक रूप से अपनी आयु के स्तर के बच्चों से किसी भी योग्यता में आगे रहते हैं।

(c) प्रतिभाशाली बालक :-

प्रतिभाशाली बालक वे बालक होते हैं जिनकी बौद्धिक क्षमता सामान्य बालकों की अपेक्षा अधिक होती है। वे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट प्रदर्शन करते हैं।

टरमैन के अनुसार :-

ऐसे बालकों की बुद्धिलब्धि 140 से ऊपर होती है जबकि गिल के अनुसार 130 से 200 बुद्धिलब्धि वाले बालक प्रतिभाशाली होते हैं।

विटी के अनुसार :-

प्रतिभाशाली बालक संगीत, कला, सामाजिक नेतृत्व तथा दूसरे विभिन्न क्षेत्रों में अच्छा प्रदर्शन करते हैं।

(b) सृजनात्मक बालक :-

सृजनात्मक शक्ति हर व्यक्ति में किसी न किसी रूप में पाई जाती है। यदि बच्चे को उचित वातावरण प्रदान किया जाए तो वह अपनी मौलिकता को अच्छे ढंग से प्रस्तुत कर सकता है। सृजनात्मक बच्चों में उच्चस्तरीय सृजनात्मक प्रतिभा पाई जाती है। नई नई वस्तुएँ बनाना व पुरानी वस्तुओं को नया रूप देना इनकी विशेषताओं में शामिल है। इनका चिन्तन मौलिक, अन्वेषणात्मक तथा असाधारण होता है। यह आवश्यक नहीं है कि पढ़े लिखे लोग जैसे डाक्टर, वकील, लेखक आदि ही सृजनशील हो सकते हैं, बल्कि अनपढ़ व्यक्ति भी अपने क्षेत्र में सृजनशील हो सकता है।

Scanned with CamScanner

(c) मानसिक मंद बालक :→

जिन बालको की बुद्धि - लब्धि सामान्य बालको से कम होती है उसे हम पिछड़ा या मानसिक मंद बालक कहते है। इस प्रकार के बालको की बुद्धि - लब्धि 75 या इससे कम होता है। मानसिक मंदता एक भ्रमणात्मक संकल्पना है। मानसिक रूप से मंद बालक घर, समाज तथा विद्यालय का कार्य नही कर पाते है।

मानसिक मंद बालको का तीन प्रकार से वर्गीकरण किया गया है :—

1. जड़ बुद्धि — 25 से कम
2. मूढ़ बुद्धि — 26 से 50
3. मूर्ख बुद्धि — 51 से 75

(3) शैक्षिक रूप से विशिष्ट बालक :→

शैक्षिक रूप से विशिष्ट बालको का अर्थ है जो बालक सामान्य कक्षाओ मे सभी बच्चो के साथ कितना सीख सकता है। एक कक्षा मे कुछ बालक ऐसे होते है जो तीव्र गति से सीखते है कुछ बालक ऐसे होते है जो कक्षा मे किसी तथ्य को बार - बार समझाने पर भी नही समझते है और औसत बालको के समान प्रगति नही कर पाते है। इनकी बुद्धिलब्धि सामान्य होने पर भी शैक्षिक उपलब्धि कम होती है।

(a) शैक्षिक तीव्र बालक :→

शैक्षिक तीव्र बालक का अर्थ है कक्षा - कक्ष मे शिक्षण - अधिगम की प्रक्रिया के अन्तर्गत जो भी सिखाया जाता है वे शीघ्र गति से सीख लेते है। अर्थात कक्षा मे जो भी पढ़ाया जाता है ऐसे बच्चे उसे बहुत जल्दी सीख लेते है। ऐसे बच्चे सहगामी क्रियाओ मे भी रूचि लेते है।

(b) शैक्षिक रूप से पिछड़े बालक :-

शैक्षिक रूप से पिछड़े बालक वह होते है जो कक्षा में किसी तथ्य को बार-बार समझाने पर भी नही समझते है और औसत बालको के समान प्रगति नही कर पाते है, ये पाठ्यक्रम तथा सहगामी क्रियाओ मे भी रुचि नही लेते है,

बर्ट के अनुसार :-

"एक पिछड़ा बालक वह है जो अपने स्कूल जीवन के मध्यकाल मे अपनी कक्षा से नीचे की कक्षा का काम नही कर सकते जो कि उसकी आयु के लिए सामान्य कार्य हो।"

(c) सीखने मे अक्षम बालक :-

सीखने मे अक्षम बालक उन बालको को कहते है जो कि मौखिक अभिव्यक्ति, सुनने संबंधी क्षमता, लिखित कार्य, मूलभूत पढ़ने की क्रियाओ मे, गणितीय गणना, गणितीय तर्क तथा स्पेलिंग मे उनकी शैक्षिक उपलब्धि तथा बौद्धिक योग्यताओ मे सार्थक विभेद दिखायी देता है। यह बालक ठीक प्रकार से सुन, सोच, बोल, पढ़ तथा लिख नही पाते है।

सीखने मे अक्षम बालको मे मुख्य रूप से अति क्रियाशीलता, विलम्बित वाणी विकास पढ़ने, लिखने तथा गणित की समस्या तथा स्मृति ह्रास आदि पाये जाते है,

(3) सामाजिक रूप से विशिष्ट बालक :- (6)

समाज के अनुरूप व्यवहार न कर सकने वाले बालक सामाजिक रूप से विशिष्ट बालक कहलाते है। इस प्रकार से अगर कोई बालक असामाजिक तथा असामान्य व्यवहार करता है, समाज के नियमो का पालन नही करता तथा शान्ति भंग करता है, तो वह अपराधी बालक कहलाता है,

Scanned with CamScanner

(a) कुसमायोजित बालक :-

कुसमायोजित बालक जो अपने वातावरण के साथ अनुकूलन करने में असमर्थ रहते है वे अपराधी तथा असामाजिक अथवा आक्रामक या अनैतिक व्यवहार के होते है इस प्रकार के बालको के साथ पड़कर ऐसी अवांछित तत्वो को सीख लेते है जो कि सामाजिक समायोजन में बाधा पहुंचाती है ऐसे व्यवहारो के कारण वे समस्या उत्पन्न करते है।

(b) बाल अपराधी :-

जब किसी बच्चे द्वारा कोई कानून-विरोधी कार्य किया जाता है तो उसे बाल अपराध कहते है। कानूनी दृष्टिकोण से बाल अपराध 8 वर्ष से अधिक या 16 वर्ष से कम आयु के बालक द्वारा किया गया कानूनी विरोधी कार्य है जिसे कानूनी कार्यवाही के लिये बाल न्यायालय के समक्ष उपस्थित किया जाता है।

(c) समस्यात्मक बालक :-

समस्यात्मक बालक वह है जो सामान्य बालको से असाधारण रूप से भिन्न होते है इन बालको का समायोजन परिवार समाज तथा विद्यालय में नही हो पाता जिसके कारण समस्या उत्पन्न करते है ऐसे बालक सामान्य व्यवहार नियमो तथा मान्यताओ का पालन नही करते उनका व्यक्तित्व विकृत होता है।

वेलेंटाइन के अनुसार :-

" समस्यात्मक बालक हुए है जिनका व्यवहार और व्यक्तित्व गंभीर रूप से असामान्य होता है।"

Scanned with CamScanner

(d) विचलित बालक :-

बाल अपराध आधुनिक समाज की चर्चित एवं गंभीर समस्या है। 'बाल अपराध' व्यक्ति के व्यक्तित्व के विघटन से संबंधित ऐसा प्रकार है जिसका संबंध बालकों के विचलित व्यवहार से है। जब कोई बालक समाज द्वारा निर्धारित मूल्यों व प्रतिमानों की अवहेलना करता हुआ ऐसा आचरण करने लगता है जिससे वह एक आदर्श बालक के पद से च्युत हो जाता है तो ऐसे बालक को 'विचलित बालक' कहा जाता है।

(e) नशे के आदि बालक :-

नशे का अर्थ उन वस्तुओं से है जिनके सेवन से कृत्रिम उत्तेजना Artificial excitement की स्थिति उत्पन्न हो। ऐसी वस्तुओं की प्रतिक्रिया शरीर के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती है। नशे की दशा में व्यक्ति बौद्धिक विवेक खो बैठता है और बहुत से ऐसे काम कर बैठता है जो उचित नहीं होते है। अत्यधिक नशे से शरीर को स्थायी हानि होती है।

(f) संवेगात्मक रूप से विचलित बालक :-

ऐसे बालक परिवार के सदस्यों, संगी साथियों में अपना समायोजन नहीं कर पाते है। फलस्वरूप या तो वे अकेलेपन में जीवन व्यतीत करना पसन्द करते है या उग्र प्रवृति के बन जाते है। अपनी और दूसरो की भावनाओं को पहचानने की क्षमता, अलग भावनाओं के बीच भेदभाव और उन्हें उचित रूप से समझना, सोच और व्यवहार मार्गदर्शन करने के लिए भावनात्मक जानकारी का उपयोग ही भावनात्मकता या संवेगात्मकता कहा गया है।

Q. आधिगम असमर्थता का क्या अर्थ है। आधिगम असमर्थता की प्रमुख विशेषताओं, कारणों, पहचान तथा शिक्षा पर प्रकाश डालिए।

Ans आधिगम अक्षम बालकों का अर्थ :-

अधिगम अक्षम = आधिगम + अक्षम

जो सीखने की दृष्टि से बहुत अधिक असमर्थ या अक्षम होते है।

आधिगम गति मे अवधान मे दिक्कत आना।

आधिगम अक्षमता से अभिप्राय उन दशाओं से होता है जो मानसिक का सुचारू रूप से कार्य करने मे अक्षम होने, किसी के द्वारा बोली गई बात को समझने मे अक्षम होने, बोलने मे असमर्थ होने, लिखने मे असमर्थ होने, शब्दों को ठीक प्रकार से ना देख पाने के कारण, पढ़ने मे असमर्थ होने, बोलने मे असमर्थ होने, लिखने मे असमर्थ होने, गणितीय संख्याओं में कठिनाई होने से संबंधित है।

ऐसा बालक जो उपरोक्त दशाओं में किसी एक या एक से अधिक कारणों से आधिगम में परेशानी का सामना करता है, तो उसे आधिगम अक्षम या आधिगम अशक्त बालक कहा जाता है।

परिभाषाएँ :-

फेडरल के अनुसार :-

"विशिष्ट आधिगम अक्षमता को लिखित एवं मौखिक भाषा के प्रयोग एवं समझने मे शामिल एक या अधिक मूल मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया मे विकृति, जो व्यक्ति के सोच, बोल, पठन, लेखन एवं अंकगणितीय गणना को पूर्ण या आंशिक रूप से प्रभावित करता है, के रूप मे परिभाषित किया जा सकता है।"

Scanned with CamScanner

किर्क के अनुसार :-

"अधिगम अक्षमता एक सामान्य पद है, जो मानव में अनुमानत: केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र के सुचारु रूप से नहीं कार्य करने कारण उत्पन्न आन्तरिक विकृतियों के विषम समूहों को दर्शाता है।"

अधिगम असमर्थ बच्चों की विशेषताएँ :-

(1) अतिसक्रियता
(2) सांवेगिक अस्थिरता
(3) प्रोत्साहन में कमी
(4) विशिष्ट शैक्षिक समस्याएँ
(5) प्रात्यक्षिक गतिक स्थिरता
(6) सामान्य समन्वय का अभाव
(7) स्मृति एवं चिन्तन व्यवधानित
(8) अध्ययन समस्या
(9) आंतरिक स्थिति
(10) स्थायी स्वरूप
(11) विकृतियों का विषम समूह
(12) जैविक समस्या व केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र की कार्य-विरूपता से संबाधित
(13) मनोवैज्ञानिक समस्या
(14) अन्य प्रकार की विकृतियों के साथ भी।
(15) भाषा का विलम्बित विकास
(16) अपर्याप्त समय संप्रत्यय
(17) संबंध पर निर्णय में कठिनाई
(18) निम्न मानवीय दक्षता
(19) निम्न स्तरीय गत्यात्मक समन्वय
(20) प्रत्यक्षीकरण दोष
(21) स्मृति दोष

Scanned with CamScanner

(22) हाइपर क्रिया

(23) ध्यान का अभाव

(24) दिशा संबंधी भ्रम

(25) स्थान ज्ञान का अभाव

अधिगम असमर्थता के कारण

अधिगम असमर्थता के वैसे तो कई कारण एवं कारक हो सकते है परन्तु जो प्रमुख है एवं जिनकी आपको जानकारी होनी चाहिए – अधिगम असमर्थता के अन्तर्गत अधिगम विकृति पर किये गए शोध अनुसंधानो एवं सिद्धान्तो के अनुसार इस विकृति के कारको को निम्नलिखित तीन भागो मे बाँटा गया है!–

(1) जैविक कारक

(2) जननिक कारक

(3) पर्यावरणीय कारक

(1) जैविक कारक :–

आधिगम अक्षमता विभिन्न प्रकार की जैविक क्रियाओं के विकार, उपापचयी दोष, हाइपोग्लाईसिमिया, थायराइडिज्म आदि विकृति होने पर भी होता है। बालक के जन्म के समय अत्यधिक तनावपूर्ण घटनाक्रम, जैसे – तेज बुखार होना, सिर मे चोट लग जाना व अल्प पोषण की वजह से भी यह दोष पाया जाता है। कई विद्वानो का मत है कि आधिगम असमर्थी बच्चो मे केन्द्रीय नाड़ी संस्थान के दोष या सुचारू रूप से कार्य न करने के कारण उत्पन्न होते है।

(2) जननिक कारक (आनुवांशिकता) :–

परिवार इतिहास अध्ययन विधि और युग्मन अध्ययन विधि इस मत का समर्थन करती है।

Scanned with CamScanner

इसके अनुसार आनुवांशिकी के कारण जिन माता - पिता में अधिगम अक्षमता जैसे विकार पाये जाते हैं उनके बच्चों में भी भाषा, वाणी और पढ़ने व लिखने संबंधी विकृतियां पाई जाती है।

डीकर एवं हॉलग्रेन (1960) ने अपने अध्ययनों में पाया कि अधिकांश बच्चों में पठन कौशल तथा भाषा संबंधी समस्याएं आनुवांशिकता के कारण होती है, ऐसे बहुत से प्रमाण है जो बताते है कि अधिगम असमर्थता एक परिवार से दूसरे परिवार में स्थानान्तरित होती है,

(ख) पर्यावरणीय कारक :-

गर्भावस्था एवं बाल्यावस्था के दौरान विषाक्त तत्वों को ग्रहण करने से भी अधिगम अक्षमता विकार पैदा होता है, कई शोधों में यह निष्कर्ष सामने आया है कि सीसा (पेंट, सेरेमिक व खिलौने आदि) कई अन्य विषैले तत्वों से अत्यधिक नजदीकी या इनके सेवन से अधिगम अक्षमता शेष होने की सम्भावना बढ़ जाती है,

विद्वानों का मत है कि यदि अध्यापक बच्चों के सीखने की समस्याओं की ओर स्कूल के प्राथमिक दिनों से ही ध्यान दे तो कुछ अधिगम असमर्थताओं को टाला जा सकता है,

Scanned with CamScanner

अधिगम असमर्थियों की पहचान :-

अधिगम असमर्थ बालकों की पहचान के लिए मूल्यांकन प्रक्रिया का प्रयोग किया जाता है। मूल्यांकन महत्वपूर्ण उपकरण है जो शिक्षकों को अपने छात्रों के सीखने के संबंध में बेहतर जानकारी प्राप्त करने में सहायता करते है। आकलन शिक्षकों को बेहतर ढंग से अपने छात्रों का आकलन करने में सहायता करते है कि वे पाठों को समझते है या नहीं, ताकि वे सही निर्णय ले सके।

मूल्यांकन प्रक्रिया को दो भागों में बाटां गया है :—

(1) औपचारिक मूल्यांकन :-

जैसा कि नाम से पता चलता है, औपचारिक मूल्यांकन एक औपचारिक तरीके से पता लगाने के औपचारिक तरीके है जो एक छात्र ने शिक्षा अवधी के दौरान सीखा है या सुधार किया है। सभी औपचारिक मूल्यांकन में परीक्षणों के प्रशासन की मानकीकृत पद्धतियां है! उनके पास ग्रेडिंग का एक औपचारिक तरीका है और साथ ही उन ग्रेड की व्याख्या करना जिससे शिक्षक को प्रदर्शन का आकलन करने की अनुमति मिलती है। प्रत्येक पाठ के अंत में विभिन्न प्रकार के आयाम है जो इस बात का आकलन करने के लिए है कि छात्र ने पाठ में प्रस्तुत अवधारणा को सीखा है या नहीं। क्या विद्यार्थी विषय के आधार पर समस्याओं को हल कर सकता है,

इस प्रकार के मूल्यांकन उपकरण छात्रों को अपने प्रदर्शन के लिए पुरस्कृत करने के लिए उच्च अंक प्राप्त करने में मदद करते है, जबकि असफल बच्चों को भविष्य में स्वयं को बेहतर बनाने के लिए प्रोत्साहित करते है।

उदाहरण :- नैदानिक परीक्षण, उपलब्धि परीक्षण, स्क्रीनिंग आदि।

अनौपचारिक आकलन →

अनौपचारिक मूल्यांकन उपकरण ऐसे उपकरण होते है जो मानकीकृत परीक्षणो के उपयोग के बिना छात्रो को प्रदर्शन और कौशल स्तरो का मूल्यांकन ~~और~~ कर सकते है। इन उपकरणो मे प्रदर्शन को मापने या मूल्यांकन करने के लिए कोई मानकीकृत टूल नही है। अनौपचारिक मूल्यांकन व्यक्तिपरक होते है और प्रदर्शन का मूल्यांकन करने के लिए कोई भी मानदंड नही होता है।

औपचारिक मूल्यांकन लेने के दौरान कुछ छात्र घबरा जाते है और अपनी वास्तविक क्षमता के अनुरूप नही होते है, जबकि छात्र भी परेशान हो जाते है, जब शिक्षक अचानक उन्हे जवाब देने के लिए कहता है। इसलिए शिक्षको को अपने छात्रो के कौशल का मूल्यांकन करने के लिए दोनो तरह के मूल्यांकनो का स्वस्थ मिश्रण होना चाहिए।

जैसे :- परियोजनाएँ, प्रयोग, प्रस्तुतियाँ।
अवलोकन, साक्षात्कार
चेकलिस्ट आदि।

Scanned with CamScanner

अधिगम असमर्थ बालकों की समस्याएं

(1) बिना सोचे-विचारे कार्य करना।
(2) उपयुक्त आचरण नहीं करना।
(3) निर्णयात्मक क्षमता का अभाव।
(4) स्वयं के प्रति लापरवाही।
(5) लक्ष्य से आसानी से विचलित
(6) सामान्य ध्वनियों के प्रति आकर्षण
(7) भावात्मक अस्थिरता
(8) स्थिर रहने की असमर्थता
(9) स्वप्रगति के प्रति लापरवाही
(10) सामान्य से ज्यादा सक्रियता
(11) गामक क्रियाओं में बाधा
(12) पाठ्य सहगामी क्रियाओं में शामिल नहीं
(13) क्षीण स्मरण शक्ति
(14) प्रत्यक्षीकरण संबंधी दोष
(15) केन्द्रीयता का अभाव
(16) स्मृति समस्या
(17) वाचन समस्या
(18) लेखन समस्या
(19) सम्प्रेषण बाधित
(20) संख्यात्मक समस्या
(21) समायोजन की समस्या
(22) अधिक व्यग्रता
(23) अनावश्यक उत्तेजना
(24) अंग संचालन में दोष
(25) संवेगात्मक समस्याएं
(26) एकाग्रता का अभाव
(27) व्यवहार संबंधी समस्याएं
(28) मन्द मानसिक क्रियाएं

Scanned with CamScanner

अधिगम अक्षमता के प्रकार

→ (1) पठन अक्षमता Reading Disabilities
- (a) डिस्लेक्सिया Dyslexia
- (b) एलेक्सिया Alexia

→ (2) लेखन अक्षमता Writing Disabilities
- (a) डिस्प्रैक्सिया Dyspraxia
- (b) डिस्ग्राफिया Dysgraphia

→ (3) भावाभिव्यक्ति अक्षमता Expression Disabilities
- (a) तुतलाना Stammer
- (b) हकलाना Stutter

→ (4) गणितीय अक्षमता Mathematical Disabilities
डिस्कैलकुलिया ↓
- (a) लौक्सिकल Dyscalculia
- (b) ग्राफिकल Dyscalculia
- (c) ओपरेशनल Dyscalculia
- (d) गुणात्मक Dyscalculia
- (e) मात्रात्मक Dyscalculia

→ (5) भाषा संबंधी अक्षमता Language Disabilities
- (a) अफेजिया Aphasia
- (b) डिस्फेजिया Dysphasia

→ (6) शब्दों की वर्तनी संबंधी अक्षमता
Spelling Disabilities

Scanned with CamScanner

→ अन्य प्रकार

(1) डिस्मीरफिया
(2) अप्रोक्सिया
(3) डिस्थीमिया
(4) प्रोजेरिया
(5) डिंमासिया
(6) बुलीमिया
(7) हाइपरलेक्सिया
(8) अग्रेसिया
(9) आसिनबोलिया
(10) डिसआर्थोग्राफिय

→

अधिगम अक्षमता के प्रकार

(1) पठन अक्षमता :-
इससे तात्पर्य पढ़ने मे विकार होना या किसी तरह की समस्या या कमी से है।

(a) डिस्लेक्सिया :-
डिस्लेक्सिया एक व्यापक शब्द है, जिसका संबंध पठन विकार से है। इस अधिगम अक्षमता में बालक को पढ़ने मे कठिनाई होती है। क्योंकि वह वर्ड शब्दो के कुछ अक्षरो जैसे B एवं D मे विभेद नही कर पाते है। डिस्लेक्सिया से पीड़ित बच्चे जैसे saw और was, nuclear और unclear मे अंतर नही समझ पाते है।

(b) अलेक्सिया :-
मस्तिष्क में किसी प्रकार की क्षति के कारण पढ़ने में अक्षमता को अलेक्सिया कहा जाता है। यह अक्वायर्ड (अर्जित) डिस्लेक्सिया है। अलेक्सिया के कारण अफेज्या एवं डिस्ग्राफिया जैसी अधिगम अक्षमता होना भी संभव है किंतु प्रत्येक स्थिति में आवश्यक नही है।

(2) लेखन अक्षमता :-
इससे तात्पर्य लिखने में विकार होना या किसी तरह की समस्या या कमी से है।

(a) डिस्प्रेक्सिया :-
यह अप्रेक्सिया का एक प्रकार है। जिसमे व्यक्ति मस्तिष्क मे क्षति के कारण सूचना गतिक कौशलो मे निपुण नही हो पाता है। वह हाथ एवं आखो के बीच समन्वय एवं संतुलन स्थापित नही कर पाता है। डिस्प्रेक्सिया तंत्रिका तंत्र संबंधी विकार है जिसे सेंसरी इंटीग्रेशन डिसआर्डर कहा जाता है।

Scanned with CamScanner

(b) <u>डिस्ग्राफिया</u> :-

यह लेखन संबंधी विकार है। इसमे बच्चा कुछ अक्षरो को लिखने मे प्राय: गलती करता है। बालक ठीक से लिख भी नही पाता है और उसकी लिखावट भी अच्छी नही होती है। इसका कारण हाथ हथेली या अंगुलियो संबंधी गड़बड़ियां होती है।

(3) भावबोधक असमर्थता :-

शारीरिक कारक मुख्य रूप से बच्चो मे हकलाने का कारण बनता है। इसके कई कारण है बोलने के अंगो मे बाधा पहुंचना ही भावबोधक असमर्थता है।

(a) तुतलाना :-

उच्चारण की समस्या होना और साफ नही बोल पाना को ही तुतलाना कहा जाता है। इसमे बालक अक्षरो का उच्चारण गलत करता है जैसे 'र' को 'ड' या 'ल' बोलना आदि। इसके कई कारण हो सकते है जैसे जीभ का नीचे ज्यादा चिपके रहना, सुनने मे दिक्कत से सही शब्द नही समझ पाना आदि।

(b) हकलाना :-

रूक - रूक बोलना, एक ही शब्द को बार - बार बोलना, तेज बोलना, बोलते हुए आंखे भींचना, होंठो मे कंपकपाहट होना, जबड़े का हिलना आदि हकलाने के लक्षण है।
इसके कारण है- बोलने मे काम आने वाली मसल्स व जीभ पर कंट्रोल न होना। जेनेटिक वजहे (पैरेंट्स को है तो बच्चो मे होने की आशंका) टेंशन, कमजोरी, डर, थकान आदि से भी हकलाहट बढ़ जाती है।

Scanned with CamScanner

(5) गणितीय अक्षमता :-

इससे तात्पर्य गणित मे किसी तरह की समस्या या कमी से है। कई लोगो को गणित सीखने मे समस्या होती है।

डिस्केलकुलिया :-

यह एक गणितीय अक्षमता है। छात्र गणित के तथ्यो, Number को समझने मे कठिनाई महसूस करते है। डिस्कैलकुलिया का अर्थ है गणना करने में असमर्थता।

डिस्कैलकुलिया के अन्तर्गत निम्न अक्षमताए आती है:-

(a) लेक्सिकल डिस्कैलकुलिया :- जो गणितीय संकेतो को पढ़ने मे समस्याओ को संदर्भित करता है, जिसमे आपरेशन के संकेत (+, -) और अंक शामिल है।

(b) ग्राफिकल डिस्कैलकुलिया :- जो गणितीय प्रतीको और अंको को लिखने मे समस्याओ को संदर्भित करता है।

(c) आपरेशनल डिस्कैलकुलिया :- जो अंकगणितीय आपरेशन करने मे समस्याओ को संदर्भित करता है।

(d) गुणात्मक डिस्केलकुलिया :- निर्देशो की समझ मे कठिनाइयो या एक आपरेशन के लिए आवश्यक कौशल मे मास्टर करने मे विफलता का एक परिणाम है।

(e) मात्रात्मक डिस्कैलकुलिया :- गिनती और गणना के कौशल मे कमी होना।

(5) भाषा संबंधी अक्षमता :-

इससे तात्पर्य है जिनको मौखिक रूप से बोलना नहीं आता या किसी प्रकार की भाषा से संबंधित समस्या या कमी है।

(a) अफेज्या :-

भाषा एवं सम्प्रेषण अधिगम अक्षमता को अफेज्या कहा जाता है। इससे पीड़ित छात्र मौखिक रूप से सीखने एवं अपने विचारों की अभिव्यक्ति प्रदान करने में कठिनाई अनुभव करते है। सामान्यत: मास्तिष्क में किसी प्रकार की क्षति से यह विकार उत्पन्न होता है।

(b) डिस्फेमिया :-

मास्तिष्क में क्षति के कारण बातचीत करने में आंशिक या पूर्णता अक्षमता को डिस्फेमिया कहा जाता है। डिस्फेमिया में समस्या मुंह और गले में उत्पन्न होती है। यह तंत्रिका विकार है और यह आंशिक कठिन प्रकार का होता है।

(6) शब्दों की वर्तनी संबंधी अक्षमता :-

यह एक न्यूरोलाजिकल - आधारित हानि जो बोलने और लिखित भाषा संरचना के लिए किसी व्यक्ति के ज्ञान और स्मृति को प्रभावित करती है, इस प्रकार की अक्षमता के कारण बालक वर्तनी में त्रुटियाँ करता है।

वह शब्दों के विभिन्न अक्षरों को क्रम से नहीं लिख पाता एवं उसके स्थान बदल देता है।

जैसे :- लड़की के स्थान पर लकडी एवं सरल के स्थान पर सलर लिखता है।

Scanned with CamScanner

(7) अन्य प्रकार

(1) डिस्मोरफिया :→ भ्रम वाली स्थिति। शरीर के अंगो के प्रति भ्रम।

(2) अप्रेक्सिया :→ शारीरिक विकार। जिसके कारण मांसपेशियो के संचालन से गतिक कौशल मे निपुण नही।

(3) डिस्थीमिया :→ गंभीर तनाव की स्थिति। मन: स्थिति हमेशा निम्न रहती है।

(4) प्रोजेरिया :→ कम आयु मे वृद्ध दिखना।

(5) डिमेंसिया :→ तर्क न कर पाना। स्मरण शक्ति कमजोर होना।

(6) बुलीमिया :→ भोजन ग्रहण प्रवृति संबंधी।

(7) हाइपरलेक्सिया :→ भाषा और भाषण कौशल के बिना असाधारण पढने की क्षमता। भाषा की कमी के साथ सीखने की अक्षमता।

(8) अग्रेसिया :→ सुनकर लिखने की अक्षमता। लेखन मे विचारो को व्यक्त करने की क्षमता का नुकसान।

(9) आसिफ्वोलिया :→ शरीर की छवि के विकार। अपने शरीर के बारे मे विचार।

(10) डिसआर्थोग्राफिया :→ वर्तनी संबंधी विकार।

Scanned with CamScanner

UNIT-1

समावेशी शिक्षा

Inclusive Education

समावेशी शिक्षा का अर्थ :-

शिक्षा का समावेशीकरण यह बताता है कि विशेष शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक सामान्य छात्र और एक दिव्यांग को समान शिक्षा प्राप्ति के अवसर मिलने चाहिए। इसमें एक सामान्य छात्र एक दिव्यांग छात्र के साथ विद्यालय में अधिकतर समय बिताता है। साधारणतः छात्र एक कक्षा में अपनी आयु के हिसाब से रखे जाते हैं चाहे उनका अकादमिक स्तर ऊँचा या नीचा ही क्यों न हो। शिक्षक सामान्य और विकलांग सभी बच्चों के साथ एक जैसा बर्ताव करते हैं,

सफल समावेशी शिक्षा मुख्य रूप से छात्र मत-भेदों और विविधता को स्वीकार करने, समझने और उपस्थित होने के माध्यम से होती है, जिसमें शारीरिक, संज्ञानात्मक, शैक्षणिक, सामाजिक और भावनात्मक शामिल हो सकते हैं। समावेशी शिक्षा वह है जिसमें सामान्य बालक विद्यालय में बाधित बालकों के साथ शिक्षा प्राप्त करते हैं,

परिभाषाएँ :-

स्टीफेंस के अनुसार :-

"शिक्षा की मुख्य धारा का अर्थ क्षति-युक्त (पूर्ण रूप से अपंग नहीं) बच्चों की सामान्य कक्षाओं में शिक्षण व्यवस्था करना है।"

रहमन हिफजर के शब्दों में :-

"शिक्षा के क्षेत्र में एक क्षतियुक्त बालक का सामान्य कक्षा-कक्ष के पर्यावरण में समावित करने का अर्थ है, अपेक्षारहित सामान्य बालकों के साथ कक्षा में सहयोगी शिक्षा देना।"

समावेशी शिक्षा की आवश्यकता

समावेशी शिक्षा, शिक्षण की ऐसी प्रणाली है जिसमे विशेष आवश्यकता वाले बच्चो को सामान्य बच्चो के साथ मुख्यधारा के स्कूलो मे पठन-पाठन और आत्मनिर्भर बनने का मौका मिलता है जिससे वे समाज की मुख्यधारा मे शामिल हो सके। इसके तहत स्कूलो मे पठन-पाठन के अलावा विकलांग बच्चो के लिए बाधा-रहित वातावरण का निर्माण कार्य भी शामिल है।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चे सामान्यत: दृष्टि, श्रवण एवं आंगिक अक्षमता के साथ-साथ मानसिक मंदता आदि से ग्रस्त होते है। इन्हे सामान्य बच्चो के साथ शिक्षा इसलिए आवश्यक है क्योकि समाज मे ऐसे बच्चो की आबादी 5 से 10 फीसदी है। इसलिए ऐसे बच्चो का शिक्षा मे समावेशन किया जाना अति आवश्यक है।

समावेशी शिक्षा का महत्व निम्न कारणो से है—

(1) शैक्षिक वातावरण
(2) कम खर्चीली
(3) मानसिक विकास
(4) सामाजिक मूल्यो का विकास
(5) समानता का सिद्धान्त
(6) प्राकृतिक वातावरण
(7) व्यक्तिगत लक्ष्यो हेतु अभिप्रेरित
(8) व्यक्तिगत शक्तियो का विकास
(9) विशिष्ट बच्चो को मुख्य धारा से जोड़ना
(10) सभी को विकास के समान अवसर
(11) शैक्षिक आवश्यकताओ की पूर्ति
(12) सम्पूर्ण शिक्षा का हिस्सा

समावेशी शिक्षा की विशेषताएं

समावेशी शिक्षा से उन सभी तथ्यों को सम्मिलित किया जाता है जो विशिष्ट बालकों पर लागू होते हैं अर्थात समावेशी शिक्षा शारीरिक, मानसिक, प्रतिभाशाली तथा विशिष्ट गुणों से युक्त विभिन्न बालकों पर अपनायी जाती है। यह एक ऐसी शिक्षा पद्धति है जो यह तय करती है कि प्रत्येक छात्र को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले और इसमें उनकी योग्यता, शारीरिक - अक्षमता, भाषा - सांस्कृति पारिवारिक पृष्ठभूमि तथा उम्र किसी प्रकार का अवरोध पैदा न कर सके।

सेनेगाल के अनुसार :-

"हर शिशु को शिक्षा का बुनियादी अधिकार है और उसे अधिगम का एक स्वीकार्य स्तर प्राप्त करने और बनाए रखने का अवसर दिया जाना चाहिए।"

माइकेल के अनुसार :-

"प्रत्येक बच्चे की चरित्रगत विशिष्टताएं, रुचियां, योग्यता और सीखने की आवश्यकताएं अनोखी होती है।"

विशेषताएं :-

(1) सभी के लिए शिक्षा।
(2) विभिन्नताओं की पहचान।
(3) विशिष्ट बालकों का समर्थन।
(4) शिक्षा एक मौलिक अधिकार।
(5) विभिन्नताएं कोई समस्या नहीं।

Scanned with CamScanner

६) सुदृढ़ नीतियाँ
७) विद्यालय का उचित आधुनिकीकरण।
८) पाठ्यक्रम अधिक लचीला।
९) मानसिक स्तर का विशेष ध्यान।
१०) विशेष व्यवस्था।
११) आत्मविश्वास की भावना विकासित।
१२) विशिष्ट व सामान्य शिक्षा में संबंध।
१३) सहयोगी भावना विकासित।
१४) शिक्षक शिक्षण अधिकतम उपयोगित!
१५) विशिष्ट शिक्षण विधियाँ।

समावेशी शिक्षा से संबंधित विभिन्न शिक्षा आयोगों की रिपोर्ट।

१) सार्जेंट आयोग १९४४) :-

जहाँ तक संभव हो निःशक्त बच्चों को सामान्य बच्चों से अलग नहीं किया जाना चाहिए अंतत निःशक्त बच्चों के साथ सामान्य विद्यालयों में विशिष्ट व्यवहार किया जाना चाहिए।

२) कोठारी आयोग १९६४-६६) :-

एक विकलांग बच्चों के लिए शिक्षा का पहला कार्य यह है कि सामान्य बच्चों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बनाए गए सामाजिक - सांस्कृतिक पर्यावरण में समायोजन के लिए उसे तैयार करें। इसलिए आवश्यता है कि विकलांग बच्चों की शिक्षा सामान्य शिक्षा प्रणाली का ही एक अविछिन्न अंग हो, अतः केवल बच्चों को पढ़ाने की विधि और बच्चों द्वारा ज्ञान प्राप्ति

के लिए अपनाए गए साधनों में होगा।

(3) निशक्त बच्चों के लिए समेकित शिक्षा योजना (1974):-
1974 में भारत सरकार ने "निशक्त बच्चों के लिए समेकित शिक्षा" योजना का प्रारंभ किया। केन्द्र प्रायोजित इस योजना के तहत विकलांग बच्चों को मुख्यधारा के विद्यालयों में उनके गैर-विकलांग मित्रों के साथ शिक्षा दी जाने लगी।

(4) निशक्त व्यक्ति अधिनियम (1995):-
इस अधिनियम के अध्याय 5 की धारा 26 के अंतर्गत निःशक्त बालकों के लिए निःशुल्क शिक्षा सुनिश्चित की जाने की बात कही गयी है। सरकार और स्थानीय प्राधिकारी यह सुनिश्चित करेंगे कि प्रत्येक निःशक्त बालक को 18 वर्ष की आयु प्राप्त कर लेने तक उचित वातावरण में निःशुल्क शिक्षा प्राप्त हो सके।

निष्कर्ष:-
जब हम कहते है कि सभी बच्चे हमारे देश के भविष्य है तो हमारी नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि हम इन बच्चों को अच्छी शिक्षा उपलब्ध कराएं और उन्हें देश तथा समाज में अपनी सकारात्मक भूमिका निभाने के लिए तैयार करें।

Scanned with CamScanner